International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

पर्यावरण प्रदूषण के क्षेत्र में गुरु जंभेश्वर का योगदानः एक अध्ययन

रेनु

शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर –124021, रोहतक

डॉ. कुमारी सुमन

शोध निर्देशिका, सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर –124021, रोहतक

शोध सारः

गुरु जम्भेश्वर जी, जिन्हें जम्भोजी के नाम से भी जाना जाता है, का जन्म 1451 ईस्वी में नागौर जिले के पीपासर में पंवार गोत्र के एक दूरदराज के राजस्थानी राजपूत परिवार में हुआ था[1]। उनके पिता का नाम लोहाट जी पंवार और माता का नाम हंसा बाई था। जम्भोजी ने 27 साल जंगल में अकेले बैठकर, ध्यान करते हुए बिताए[2]। उन्होंने 1485 में राजस्थान के बीकानेर जिले के नोखा के पास धोरा गांव में बिश्नोई संप्रदाय की स्थापना की। उनकी शिक्षाएं काव्य रूप में थीं, जिन्हें शब्दवाणी के नाम से जाना जाता है। उनकी शिक्षाएं 29 सिद्धांतों और 120 शब्दों में शामिल हैं[3]। उनतीस सिद्धांतों में से आठ पर्यावरण, जैव विविधता, पारिस्थितिकी की सुरक्षा के लिए सख्त दिशानिर्देश हैं और साथ ही वे अच्छी पशुपालन और जीवित चीजों के प्रति दया की भावना को प्रेरित करते हैं। ये सिद्धांत जानवरों को मारने, हरे पेड़ काटने, बैलों की नसबंदी पर सख्ती से रोक लगाते हैं, और सभी जीवों के संरक्षण को प्रेरित करते हैं। जम्भोजी ने अपने दिमाग का इस्तेमाल किया और पर्यावरण संरक्षण के आंदोलन को धार्मिक दर्शन में बदल दिया। वर्तमान समय में जब दुनिया पर्यावरणीय संकट का सामना कर रही है, तो जम्भोजी की शिक्षाएं बहुत महत्वपूर्ण साबित होती हैं।

मुख्य शब्दः जम्भोजी, बिश्नोई, शब्दवाणी, खेजड़ली।

मध्ययुगीन कुछ संतों ने अपनी शिक्षाओं में रेगिस्तानों में पानी, जंगलों और जानवरों की सुरक्षा को सर्वोपरि महत्व दिया। गुरु जम्भोजी ने भारतीय रेगिस्तान में नए संप्रदायों की स्थापना करके समाज को पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए मार्गदर्शन किया। जम्भोजी ने जंगलों और जानवरों के संरक्षण के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया।

बिश्नोई धर्म 29 आज्ञाओं के इर्द–गिर्द घूमता है। इन 29 आज्ञाओं [4] में से आठ का उद्देश्य जैव विविधता को संरक्षित करना और पशुपालन को प्रोत्साहित करना है। इस संबंध में एक कहावत है;

---

[1] चंदला, एम.एस (1998), जम्भोजीः थार रेगिस्तान के मसीहा, औरवा प्रकाशन, चंडीगढ़

[2] जम्भसागर पृष्ठ संख्याः 9–13

[3] जैन धर्म, धर्म, और पर्यावरण नैतिकता पंकज जैन द्वारा, पृ. 128

[4] क्रुक, डब्ल्यू (1986),द ट्राइब्स एंड कास्ट्स ऑफ नार्थ वेस्टर्न प्रॉविन्सेस एंड अवध खंड 1 सरकारी मुद्रण अधीक्षक का कार्यालय, कलकत्ता

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

"उनतीस धर्म की अनकदि, हृदय धरियो जोई।
जाम्भोजी कृपा करि नाम बिश्नोई होये।[5]

जाम्भोजी द्वारा आज्ञाओं में से सात आज्ञाएँ स्वस्थ सामाजिक व्यवहार के लिए दिशा–निर्देश प्रदान करती हैं। दस आज्ञाएँ व्यक्तिगत स्वच्छता और बुनियादी अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए निर्देशित हैं। अन्य चार नियम दैनिक भगवान की पूजा करने के लिए दिशा–निर्देश हैं। जम्भोजी ने अपने नियमों में स्वच्छता और पवित्रता पर जोर दिया है।

सेरा उठे सुजीव छान जल लीजिए,
दांतन कर के सीनां जीवन जल लीजिए"[6]

उन्होंने स्वास्थ्य के लिए स्वच्छ जल के महत्व को समझाया। पानी को छानकर पीने का नियम तय किया गया ताकि प्रदूषित पानी से फैलने वाली बीमारियों से बचा जा सके। जम्भोजी ने पर्यावरण एजेंडे को धर्म से जोड़ा और उसमें मानवीय संवेदनशीलता लाई। उन्होंने पर्यावरण की रक्षा में अनुष्ठानों के महत्व को भी महत्व दिया। उनके अनुसार, यज्ञ से वातावरण में हवा साफ होती है। सदियों से वे जिन तकनीकों का उपयोग करते आ रहे हैं, वे हमारी प्रथाओं के प्रमुख घटक हैं। उदाहरण के लिए, वे अपने खेतों में ढीली रेत को हवा के कटाव से बचाने के लिए झाड़ियाँ उगाते हैं और अकाल के दौरान पशुओं के लिए बहुत जरूरी चारा उपलब्ध कराते हैं। वे अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए नवीकरणीय स्रोतों को भी प्राथमिकता देते हैं। जैव विविधता को संरक्षित करने और अच्छे पशुपालन को प्रोत्साहित करने के लिए जो आठ सिद्धांत निर्धारित किए गए हैं, उनमें सभी जानवरों की हत्या और हरे पेड़ों की कटाई पर प्रतिबंध और सभी जीवन रूपों को सुरक्षा प्रदान करना शामिल है। यह विश्वास कि सभी जीवित चीजों को जीवित रहने और सभी संसाधनों को साझा करने का अधिकार है, बिश्नोई पर्यावरण–धर्म के मूल दर्शन को रेखांकित करता है।

जीव दया पालनी अर्थात सभी जीवित प्राणियों के प्रति दयालु बनें। सभी जीवित प्राणी ईश्वर की रचना हैं और उन्हें अपना जीवन जीने का अधिकार है। रुंख लीलो नहि घावे अर्थात हरे पेड़ों को न काटें [7]। पेड़ कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं जो मनुष्यों और जानवरों के लिए जीवन रेखा है। बिश्नोई धर्म इंडिगो के अत्यधिक उपयोग को रोकने के लिए नीले रंग के उपयोग को प्रतिबंधित करता है और साथ ही यह विश्वास भी करता है कि यह रंग सूर्य की हानिकारक किरणों को अवशोषित करता है और गलत कामों से जुड़ा हुआ है। बिश्नोई अंतिम संस्कार में शवों को जलाते नहीं, बल्कि जमीन में दफनाते हैं, पेड़ों को बचाना भी इसका एक कारण हो सकता है।

---

[5] सांखला, डी. एस . (2006), बिश्नोई धर्म और पर्यावरण संरक्षण, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, पृ 26
[6] आगाड़ी, बुद्धशील फुगाठी (2001), संघर्ष के स्वर, मानव चेतना प्रकाशन, पुणे , पृ 74
[7] आलम के. और हलधर डब्ल्यू.के (2018), भारत में पर्यावरण आंदोलनों के अग्रणी: बिश्नोई आंदोलन, जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट, खंड 8, संख्या 15

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

खेजडली का बलिदान

पेड़ों और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए आत्म–बलिदान का एक असाधारण प्रकरण, खेजडली नरसंहार, वैश्विक पारिस्थितिक इतिहास में सबसे प्रेरणादायक और वीरतापूर्ण घटनाओं में से एक है। यह ऐतिहासिक घटना भाद्रपद शुक्ल दशमी को वर्ष विक्रम संवत 1787 (10 सितम्बर 1730 ई.) में घटित हुई थी और इसे "खेजरली नरसंहार" या "खेजरली का खदाना" के नाम से जाना जाता है। यह पर्यावरण सक्रियता के इतिहास में सिर्फ एक अध्याय नहीं है, बल्कि एक आध्यात्मिक गाथा है, जहां सभी जीवन रूपों के लिए करुणा पर केंद्रित गुरु जम्भेश्वर की शिक्षाओं को उनकी गहनतम अभिव्यक्ति मिली। यह ऐतिहासिक घटना राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित खेजरली गांव में घटित हुई। पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता के लिए प्रसिद्ध बिश्नोई समुदाय ने पवित्र खेजड़ी वृक्षों को बचाने के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर इतिहास में अपनी विरासत छोड़ी[8]।

उस समय, महाराजा अभय सिंह जोधपुर पर शासन करते थे। यद्यपि उन्हें एक समर्पित और न्यायप्रिय सम्राट माना जाता था, लेकिन उनके नाम पर शासन आमतौर पर उनके अधीनस्थों द्वारा चलाया जाता था। इनमें से एक अधिकारी, गिरधर दास भंडारी ने व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और चापलूसी से प्रेरित होकर, एक नए महल या किले के निर्माण में उपयोग किए जाने वाले चूने के उत्पादन के लिए खेजरली गांव में खेजड़ी के पेड़ों को काटने की अनुमति मांगी। जब राजा ने अपनी चिंता व्यक्त की, तो उन्हें पता था कि गांव में गुरु जम्भेश्वर के अनुयायी रहते हैं, जो एक संत थे और सभी जीवित प्राणियों के प्रति प्रेम का उपदेश देते थे, गिरधर दास ने धोखे से राजा को आश्वासन दिया कि वह स्थिति का ध्यान रखेंगे।

सशस्त्र सैनिकों के साथ खेजड़ली पहुंचकर गिरधर दास ने पवित्र वृक्षों को काटने का आदेश दिया। जब ग्रामीणों, विशेषकर बिश्नोई संप्रदाय के सदस्यों ने इस कृत्य पर आपत्ति जताई, तो उनके सामने दो स्पष्ट विकल्प रखे गए या तो रिश्वत दें या पेड़ों को कटने दें। दोनों में से किसी एक को चुनने में असमर्थ बिश्नोईयों ने घोषणा की कि वे वृक्षों का विनाश देखने की अपेक्षा अपने जीवन का बलिदान देना अधिक पसंद करेंगे। अमृता देवी बिश्नोई नामक एक महिला के नेतृत्व में ग्रामीणों ने सैनिकों को पेड़ काटने की अनुमति देने से इन्कार कर दिया। ऐसा कहा जाता है कि अमृता ने कहा कि खेजड़ी के पेड़ बिश्नोई लोगों के लिए पवित्र हैं और उनका विश्वास उन्हें काटने की अनुमति नहीं देता। उदाहरण के तौर पर, उन्होंने अपने बच्चों और अन्य लोगों के साथ पेड़ों को गले लगाकर उनकी रक्षा की। मंत्री गिरिधर भंडारी के निर्देश पर सैनिकों ने आगे बढ़कर ग्रामीणों को मारना शुरू कर दिया। जब इस नरसंहार की खबर फैली, तो आस–पास के इलाकों से ग्रामीण आकर इस आंदोलन में शामिल हो गए और इस तरह और भी हत्याएँ हुईं। इस प्रतिरोध का नेतृत्व अमृता देवी

[8] काला, जे.सी. (2005), बिश्नोई परंपराः भारतीय रेगिस्तान का संरक्षण नीतिशास्त्र. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सस्टेनेबल डेवलपमेंट एंड वर्ल्ड इकोलॉजी, 12(4), 363–370.

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

बिश्नोई नामक एक बहादुर महिला ने किया, जिन्होंने घोषणा की एक कटा हुआ सिर एक कटे हुए पेड़ से अधिक मूल्यवान है [9]।

धन्य हो अमृता देवी जग में
धन्य युवा बेटियों का बलिदान ।
धन्य 363 विश्नोई नर नारी व बच्चे
वृक्ष हित दे गये अपने प्राण। । [10]

उनकी शहादत के बाद उनकी तीन बेटियों आसू, रत्नी और भागू ने उनके पदचिन्हों का अनुसरण किया। अंततः 363 बिश्नोई पुरुषों और महिलाओं ने अपने जीवन का बलिदान दिया, जो एक शांतिपूर्ण लेकिन गहन प्रतिरोध बन गया, जो पारिस्थितिकी और नैतिक जागरूकता के मामले में अपने समय से बहुत आगे था [11]।

जब इस नरसंहार की खबर शाही दरबार तक पहुंची तो महाराजा स्तब्ध रह गए और बहुत दुखी हुए। उन्होंने तुरंत वनों की कटाई रोक दी और एक शाही फरमान जारी किया, जिसमें वादा किया गया कि बिश्नोई समुदाय के निवास वाले क्षेत्रों में अब पेड़ों को नहीं काटा जाएगा और न ही जंगली जानवरों का शिकार किया जाएगा। सम्मान और मान्यता के प्रतीक के रूप में, समुदाय को एक ताम्रपत्र भेंट किया गया, जिसमें उनके पर्यावरण की रक्षा के अधिकार की पुष्टि की गई।

जम्भोजी एक महान दूरदर्शी थे, जिन्होंने आर्थिक विकास के लिए प्रकृति के विनाश के परिणामों को पहले ही भांप लिया था। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को देखा और अपने सिद्धांतों को बुना। उनकी 29 आज्ञाओं में उच्च नैतिक मूल्यों को शामिल करना, प्रकृति आधारित आत्मनिर्भर जीवन शैली, प्राकृतिक संसाधनों की शुद्धता बनाए रखना शामिल हैं। आठ नियम पशु, पक्षी, पेड़ और पर्यावरण की सुरक्षा से संबंधित हैं। जांभोजी ने अपनी शिक्षाओं में स्वच्छता, पवित्रता, पर्यावरण संरक्षण और मानवीय मूल्यों पर विशेष जोर दिया। सभी प्रकार की हिंसा से दूर रहना, पेड़ों को नहीं काटना, जानवरों को किसी भी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाना, उन्हें नहीं मारना, सभी जीवित प्राणियों के जीवन की रक्षा करना आदि पर जोर दिया गया है। दूरदर्शिता से संपन्न जांभोजी ने पर्यावरण संरक्षण को लोगों की दिनचर्या और व्यवहार से जोड़ने को एक धार्मिक नियम बनाया। उन्होंने समझा कि पारिस्थितिक संतुलन का आधार पर्यावरण संरक्षण है। बिश्नोई जीवों के प्रति दया के नियम का पालन करते रहे हैं और उनके पालन–पोषण और जंगली जानवरों की सुरक्षा पर जोर

[9] लोपेज, डी. एस. जूनियर (सं.) (1995). रेलिजन ऑफ इंडिया इन प्रैक्टिस, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ 327

[10] गुरू जाम्भोजी का वैश्विक चिन्तन,डॉ. सुरेन्द्र कुमार विश्नोई, राजकुमार सेवक, प्रकाशक, जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर, प्रथम संस्करण 2013,पृष्ठ संख्या 205

[11] गाडगिल, एम., और गुहा, आर. (1995), पारिस्थितिकी और समानताः समकालीन भारत में प्रकृति का उपयोग और दुरुपयोग, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ 24–26

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

देते रहे हैं। आज भी बिश्नोई के गांवों में हिरण जैसे जंगली जानवर खुलेआम घूमते देखे जा सकते हैं। महिला अनाथ पशुओं को अपने बच्चे की तरह पालती है। बिश्नोई गांवों में टंका (वर्षा जल संचयन संरचना) ओरण (पवित्र उपवन) और स्वतंत्र रूप से घूमते जानवर एकीकृत ग्रामीण पारिस्थितिकी तंत्र के अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। दुनिया अभी पर्यावरण की रक्षा की आवश्यकता के प्रति जागरूक हुई है, बिश्नोई सदियों से सतत संरक्षण का पालन कर रहे हैं। विभिन्न चल रहे पर्यावरण आंदोलनों ने भी बिश्नोई प्रथाओं को विश्व मंच पर ला खड़ा किया है। उत्तराखंड का विश्व प्रसिद्ध चिपको आंदोलन, जो पेड़ों की कटाई का विरोध करने के लिए पेड़ों को गले लगाने के अभियान के लिए जाना जाता है, भी खेजड़ली नरसंहार में बिश्नोई के बलिदान से प्रेरित था।

गऊ घृत लेवे छाण होम नित ही करो ।
पंखे से अग्न जलाय फूंक देता डरो ।[12]

यदि प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन हवन करे तो इसमें कोई संदेह नहीं कि पृथ्वी का पर्यावरण शुद्ध हो सकता है। जो लोग दैनिक हवन में भाग लेते हैं, उन्हें न केवल आध्यात्मिक लाभ मिलता है, बल्कि उनके चेहरे पर चमक और शारीरिक सुंदरता में वृद्धि भी होती है। कहा जाता है कि हवन से जीवन में शांति, समृद्धि और खुशियां आती हैं। मन, शरीर और पर्यावरण को शुद्ध करता है, तथा रहने के लिए एक पवित्र और संतुलित स्थान बनाता है। हवन मात्र एक अनुष्ठान नहीं है यह आध्यात्मिक उत्थान और पर्यावरण पुनरुद्धार का मार्ग है, जो अंततः आंतरिक और सार्वभौमिक सद्भाव की ओर ले जाता है।

श्री कृष्ण के अनुसार

अन्नाद् भवन्ति भूतानि, पर्यन्यादन्न संभवः।
यज्ञाद् भवन्ति पर्जन्यों, यज्ञ : कर्म समुद्भव । ।[13]

अर्थात् सभी जीव अन्न से पोषित होते हैं, अन्न वर्षा से उत्पन्न होता है, वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है। इसकी प्राप्ति यज्ञ से होती है, यज्ञ से ही सभी कार्यों की उत्पत्ति होती है।

जीव हत्या पर रोक

दूरदर्शी संत और पर्यावरणविद् गुरु जम्भेश्वर ने सभी जीवों के कल्याण की पुरजोर वकालत की तथा इस बात पर बल दिया कि सच्चे धर्म का सार करुणा, सह–अस्तित्व और दूसरों की सेवा में निहित है। उनका मानना था कि मानवता धर्म का सर्वोच्च रूप है और प्रत्येक व्यक्ति को अहिंसा और पर्यावरण संरक्षण के सिद्धांतों के आधार पर परोपकार की भावना विकसित करनी चाहिए। उनकी शिक्षाओं में इस बात पर जोर दिया गया कि पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखना सभी प्रजातियों के अस्तित्व को सुनिश्चित करता है। उनके विचार में,

[12] वील्होजी की वाणी में दार्शनिकता, माया विश्नोई, प्रकाशक, जाम्भाणी साहित्य अकादमी, बीकानेर, द्वितीय संस्करण 2012, पृ 230

[13] गुरू जाम्भोजी का जीवन दर्शन, डॉ. कृष्णलाल विश्नोई, प्रकाशक, जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर, प्रथम संस्करण 2014, पृ 256

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

प्रत्येक जीवित प्राणी का जीवन समान रूप से मूल्यवान है, जिस प्रकार मनुष्य को अपने जीवन पर खतरा होने पर भय और पीड़ा महसूस होती है, उसी प्रकार जानवर भी उसी पीड़ा का अनुभव करते हैं। इसलिए, गुरु जम्भेश्वर ने इस बात पर जोर दिया कि कमजोर और मूक प्राणियों की सुरक्षा सर्वोपरि है। जिस व्यक्ति में अन्य प्राणियों के प्रति दया का अभाव होता है, उसे क्रूर, हृदयहीन और हिंसक माना जाता है। इसके विपरीत, जो लोग दया और सहानुभूति दिखाते हैं, वे आध्यात्मिक जीवन का सच्चा सार धारण करते हैं। इसकी विचारधारा "अहिंसा परमो धर्मः" के शाश्वत भारतीय सिद्धांत से मेल खाती है, जिसका अर्थ है कि अहिंसा सर्वोच्च गुण है। अपनी शिक्षाओं के माध्यम से उन्होंने न केवल पशुओं के प्रति दयालुता को बढ़ावा दिया, बल्कि पर्यावरण–केंद्रित जीवनशैली की नींव भी रखी तथा मानवता को याद दिलाया कि प्रकृति की शुद्धता और जीवन की पवित्रता एक–दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं। इस करुणामय विश्वदृष्टिकोण को अपनाकर, समाज अधिक शांतिपूर्ण, टिकाऊ और नैतिक रूप से प्रबुद्ध अस्तित्व की ओर बढ़ सकता है।

गुरू जम्भे वर ने कहा है कि

हत्या करी परजीव की, वन में अगन लगाय।
तीन जन्म दुःख देख के, चौथे दोजख जाय।[14]

पर्यावरण संरक्षण और पेड़–पौधों की सुरक्षा के जो सिद्धांत गुरु जम्भेश्वर ने अपने समय में मानवता के सामने प्रस्तुत किए थे, वे आज और भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जब कई देश दुर्लभ पशु और वनस्पति प्रजातियों के विलुप्त होने का सामना कर रहे हैं, गुरु जम्भेश्वर की शिक्षाएं मानवता के लिए बहुत प्रासंगिक हो जाती हैं। वे पेड़ों और पौधों को न केवल प्राकृतिक संसाधन मानते थे, बल्कि जीवनदायिनी शक्तियां भी मानते थे, जिनकी रक्षा सभी मनुष्यों को करनी चाहिए। यदि अनियंत्रित वनों की कटाई जारी रही तो इससे न केवल जैव विविधता का नुकसान होगा, बल्कि पृथ्वी रेगिस्तान में तब्दील हो जाएगी, जिससे प्राकृतिक आपदाएं आएंगी और मानव जीवन के लिए खतरा पैदा हो जाएगा। गुरु जम्भेश्वर ने स्पष्ट रूप से इस बात पर जोर दिया कि जब प्रकृति अपना प्रकोप दिखाती है, तो कोई भी विज्ञान या शक्ति मानवता को उसकी विनाशकारी शक्ति से नहीं बचा सकती। इसलिए, यदि समाज पर्यावरण संरक्षण के अपने सिद्धांतों को अपनाए और आत्मसात करे, तो न केवल प्रकृति की रक्षा कर सकते हैं, बल्कि एक संतुलित, सुरक्षित और समृद्ध जीवन भी सुनिश्चित कर सकते हैं। उनकी शिक्षाएं न केवल आध्यात्मिक दिशा–निर्देश हैं, बल्कि वे वैज्ञानिक परीक्षण पर भी खरी उतरती हैं, जो उन्हें एक दूरदर्शी पर्यावरण विचारक के रूप में स्थापित करती हैं।

[14] हिन्दी भक्ति काव्य धारा और जाम्भाणी साहित्य,डां.कृष्णलाल विश्नोई, मांगीलाल विश्नोई, सुरेन्द्र कुमार वि नोई, प्रका ाक, जाम्भाणी साहित्य अकादमी बीकानेर, प्रथम संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या 197

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

पशुओं और पक्षियों का संरक्षण

पशु और पक्षियों का संरक्षण रेगिस्तानी क्षेत्र में, किसी के लिए खुद को बनाए रखना और प्रबंधित करना कठिन है, इसके बावजूद, बिश्नोई न केवल खुद को प्रबंधित करते हैं बल्कि वन्यजीवों को भी स्थान देते हैं। 18वें सिद्धांत के अनुसार, बिश्नोईयों को 'सभी जीवित प्राणियों के प्रति दयालु होना चाहिए', स्थानीय शब्द जीवदयापलानी में, (जीवो पर दया करना)। इस सिद्धांत का पालन करने के लिए, बिश्नोई हमेशा अपने आसपास के वातावरण में पशु और पक्षियों की रक्षा करने की कोशिश करते हैं। एक बिश्नोई का दिन पक्षियों और जानवरों को चुग्गा (अनाज) देने से शुरू होता है। सुबह–सुबह, परिवार के किसी एक सदस्य को पक्षियों और जानवरों को अनाज खिलाना होता है। गाँव के लोग चबूतरे पर अनाज खिलाते हैं और जो लोग ढाणी (खेत में घर) में रहते हैं, वे अपने घर के सामने अनाज डालते हैं। वे जंगली जानवरों और पक्षियों को भी पानी उपलब्ध कराते हैं। अधिकांश बिश्नोई जंगली जानवरों और पक्षियों की प्यास बुझाने के लिए अपने खेतों में एक छोटी सी टंकी बनाते हैं। जब भी जल स्तर कम होता है तो टंकियों को भरने के लिए ऊंटों या अन्य आधुनिक परिवहन प्रणाली का उपयोग किया जाता है। यह 18वें सिद्धांत में वर्णित विशेषता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है[15]। इसके अलावा बिश्नोई अपने घर के सामने पेड़ों पर पानी का बर्तन लटकाते हैं, ताकि पक्षी उसमें से पानी पी सकें। रेगिस्तानी क्षेत्र में पानी को बहुत महत्व दिया जाता है, जो भी बिश्नोई के घर आता है या ढाणियों में बिश्नोई निवास से गुजरता है, वे उसे आमंत्रित करते हैं और पानी पिलाते हैं। रेगिस्तानी निवासी पानी का मूल्य जानते हैं, इसलिए वे सीमित पानी का व्यवस्थित तरीके से प्रबंधन करते हैं और इसे मनुष्यों और वन्य जीवों के बीच साझा किया जाना चाहिए। बिश्नोई लोग फसल की कटाई के समय पक्षियों और जंगली जानवरों के लिए फसल का कुछ हिस्सा, जिसे स्थानीय भाषा में सांधघेरा कहते हैं, रखते हैं। वे मानते हैं कि फसलें प्रकृति से आती हैं और उसमें हर जीव का हिस्सा होता है।

दरअसल, हर अमावस्या को आस–पास के गांवों और ढाणियों से बिश्नोई जंगली पक्षियों और जानवरों के लिए ज्वार, बाजरा (आमतौर पर 2–5 किलोग्राम या इससे भी अधिक) जैसे अनाज लेकर अमृता देवी मंदिर जाते हैं। गांव और ढाणियों से कुछ बिश्नोई रोजाना शहीद स्थल, जिस स्थान पर 363 बिश्नोई शहीद हुए थे, वहां अब अमृता देवी मंदिर है, आते हैं और पक्षियों और जानवरों को चुग्गा खिलाते हैं।

बिश्नोई लोग हर दिन सबसे पहले कुत्तों के लिए रोटी बनाते हैं, इसके पीछे कारण यह है कि कुत्तों को भूखा रहने या अपने क्षेत्र के किसी अन्य पक्षी या जानवर को मारने के लिए मजबूर न होना पड़े। यह सिद्धांत सभी रूपों में जीवन के संरक्षण पर जोर देता है जो सभी जीवित प्राणियों के प्रति दया और करुणा दिखाता है। बिश्नोई क्षेत्र में गैर–बिश्नोई क्षेत्र की तुलना में अधिक जंगली जानवर, पक्षी और पेड़ हैं, जहाँ बिश्नोई आबादी नहीं है। जंगली

[15] जैन, पी. (2011). हिंदू समुदायों का धर्म और पारिस्थितिकी: जीविका और स्थायित्व, एशगेट पब्लिशिंग

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

जानवर और पक्षी जैसे काले हिरण, मोर आदि बिश्नोई निवास के आसपास देखे जा सकते हैं, जो बिना किसी डर के बिश्नोई निवास के आसपास स्वतंत्र रूप से घूमते हैं।

हिरण बिश्नोई लोगों को दूर से ही सूंघकर पहचान लेते हैं, क्योंकि बिश्नोई लोगों में गैर–बिश्नोई (अन्य पड़ोसी जातियां, जनजातियां और अन्य धार्मिक समुदाय) की तुलना में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए एक अलग पोशाक पैटर्न है। जंगली जानवर और पक्षी अक्सर बिश्नोई आवासों और कृषि क्षेत्रों के आसपास आराम करने के लिए रुकते हैं। जंगली जानवर और पक्षी बिश्नोई लोगों पर भरोसा करते हैं कि वे उनका पीछा नहीं करेंगे और उनका शिकार नहीं करेंगे। बिश्नोई न केवल जंगली जानवरों की रक्षा करते रहे हैं, बल्कि वे पालतू जानवरों की भी रक्षा और देखभाल करते हैं। 22वें सिद्धांत के अनुसार उन्हें बकरी भेड़ को बूचड़खानों में वध होने से बचाने के लिए आश्रय प्रदान करना है। बिश्नोई इस सिद्धांत की व्याख्या करते हैं कि वे बकरियों या भेड़ों को पालतू नहीं बनाएंगे, क्योंकि अगर वे फिर से भेड़ या बकरियों को पालतू बनाते हैं, तो बिश्नोई लोग अपने पालतू जानवरों को दूसरों को बेचते हैं, जिससे उनकी मौत हो सकती है। हालांकि, उनके घर में गाय और भैंस जैसे दूसरे जानवर पाले हुए हैं [16]।

वे स्थानीय घास से झोपड़ियां बनाकर जानवरों के लिए अच्छा आश्रय प्रदान करते हैं जो उन्हें गर्मियों में गर्मी से बचाता है। वे जानवरों को जूट के थैलों से भी ढकते हैं, ताकि यह उन्हें सर्दियों में ठंड से बचाए रखे। वे पालतू जानवरों को अपने परिवार के सदस्य की तरह मानते हैं और उन्हें उचित चारा और पानी देते हैं। चूंकि बिश्नोई शाकाहारी हैं, इसलिए वे दूध से बने उत्पादों का अधिक सेवन करते हैं। अधिकांश बिश्नोई गाय और भैंस का दूध पड़ोसी शहर में बेचते हैं। रेगिस्तान में बिश्नोई लोगों की आय का यह भी एक स्रोत है। बिश्नोई लोगों में पालतू जानवर रखने की प्रथा आम है।

गाय और भैंसों के गोबर का उपयोग उनके खेतों में खाद के रूप में किया जाता है, जिससे कृषि उत्पादकता बढ़ती है। इसका उपयोग आग के ईंधन के रूप में भी किया जाता है, जिसे स्थानीय रूप से थेपड़ी कहा जाता है, जिसका उपयोग जलाऊ लकड़ी के विकल्प के रूप में किया जाता है। अमावस्या के दिन, दूध किसी को नहीं बेचा जाता है और आधा हिस्सा बछड़े को जाता है। वे हलवा या अन्य मीठी चीजें बनाते हैं और पालतू जानवरों को खिलाते हैं। वे न केवल गाय को बल्कि बैलों को भी प्राथमिकता देते हैं। 23वां सिद्धांत कहता है, बैल की बडिया न करना या करवाना, जिसका अर्थ है बैलों को बधिया न करना। बिश्नोई बैलों को बधिया करने की प्रथा के खिलाफ हैं और उनका कहना है कि इससे गायों और बैलों के प्रजनन में कमी आती है। चूंकि बिश्नोई लोग कृषि पर निर्भर हैं, इसलिए वे रेगिस्तानी क्षेत्र में अपने अस्तित्व के लिए मवेशियों को भी महत्वपूर्ण मानते हैं।

[16] जोशी, के. (1995), बिश्नोईः थार रेगिस्तान के पर्यावरण–योद्धा, जर्नल ऑफ ह्यूमन इकोलॉजी, 6(3), 153–156.

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

यहाँ भी मार्विन हैरिस[17] का विचार यह दर्शाता है कि प्राचीन काल में भारत के कृषि संसाधनों के कुप्रबंधन के परिणामस्वरूप हिंदुओं द्वारा गायों की रक्षा की गई है। इसी तरह, बिश्नोई लोग आज भी बैलों को भूमि की खेती और मवेशियों के प्रजनन के लिए बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं। इसलिए, उन्हें इसकी रक्षा करनी होगी हालाँकि, रेगिस्तानी पारिस्थितिकी (थार रेगिस्तान) में, मवेशियों को पालना और पशुपालन निवासियों को अतिरिक्त आर्थिक सहायता प्रदान करता रहा है।

निष्कर्ष

गुरु जम्भेश्वर का पर्यावरण बचाने में योगदान, भारतीय इतिहास में पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने के सबसे शुरुआती और सबसे अच्छे तरीकों में से एक है। अपने सिद्धांतों के जरिए, उन्होंने पेड़ों, जंगली जानवरों, साफ पानी और इंसानी व्यवहार की सुरक्षा पर जोर दिया, ये सभी सीधे तौर पर पर्यावरण के नुकसान के कारणों को दूर करते हैं। उनकी शिक्षाओं ने बेवजह जानवरों को मारने, जंगलों की कटाई और प्राकृतिक संसाधनों के बेकार इस्तेमाल को रोकने की कोशिश की, जिससे इकोलॉजिकल बैलेंस और सस्टेनेबल जीवन को बढ़ावा मिला। पर्यावरण की जिम्मेदारी को आध्यात्मिक अनुशासन से जोड़कर, गुरु जम्भेश्वर ने यह पक्का किया कि इकोलॉजिकल नैतिकता सिर्फ एक सामाजिक जिम्मेदारी न रहकर, जीवन जीने का एक तरीका बन जाए। सफाई, अहिंसा और संयम पर उनके जोर ने उनके समय के समाज में मिट्टी, पानी और हवा के प्रदूषण को कम करने में मदद की। बिश्नोई समुदाय द्वारा इन सिद्धांतों का लगातार पालन पर्यावरण बचाने में उनके लंबे समय तक असर को दिखाता है। गंभीर पर्यावरण प्रदूषण के मौजूदा दौर में, गुरु जम्भेश्वर के विचार बहुत काम के हैं और सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए कीमती गाइडेंस देते हैं। उनका तरीका इस बात पर जोर देता है कि पर्यावरण बचाना नैतिक और सामाजिक जिम्मेदारी से अलग नहीं किया जा सकता।

[17] हैरिस, मार्विन (1966), 'भारत के पवित्र मवेशियों की सांस्कृतिक पारिस्थितिकी', करेंट एंथ्रोपोलॉजी, पृ 51 –66.